Research Paper E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 11 | ISSUE : 1 | JANUARY 2025

वर्तमान समय में व्यावसायिक शिक्षा की स्थिति

मंजू कुमारी [1] | डॉ. पुनम बाला [2]

[1] शोधार्थी, साईनाथ विश्वविद्यालय, रांची.

[2] सह – प्राध्यापक, साईनाथ विश्वविद्यालय, रांची.

ABSTRACT:

हाल के वर्षों में, व्यावसायिक शिक्षा भारत की राष्ट्रीय विकास रणनीति के एक आधारस्तंभ के रूप में उभरी है। पेशेवर दक्षताओं को बढ़ावा देने में पारंपरिक शैक्षिक ढांचे की सीमाओं ने मजबूत, कौशल-आधारित शैक्षिक मॉडलों की तत्काल आवश्यकता को रेखांकित किया है। यह अध्ययन भारत में व्यावसायिक क्षेत्र के वर्तमान परिदृश्य का परीक्षण करता है, बुनियादी ढांचे की कमी और सामाजिक कलंक जैसी प्रणालीगत बाधाओं की पहचान करता है, और शैक्षिक परिणामों को आधुनिक वैश्विक अर्थव्यवस्था की मांगों के अनुरूप बनाने के लिए रणनीतिक हस्तक्षेप का प्रस्ताव रखता है। इस समीक्षा का विषय समय के साथ-साथ भारत में व्यावसायिक शिक्षा के विकास की जांच करना है। लेखक दीर्घकालिक चुनौतियों और उभरते अवसरों दोनों को ध्यान में रखता है। व्यावसायिक प्रशिक्षण के ऐतिहासिक इतिहास का अनुसरण पूरे पुस्तक में किया गया है, जो वैदिक और बौद्ध शताब्दियों जैसे स्वतंत्रता पूर्व काल से शुरू होता है और राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) और राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान (2013-2014) जैसे महत्वपूर्ण स्वतंत्रता के बाद के नीतिगत विकास के साथ समाप्त होता है।यह राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी 2020) द्वारा लाए गए महत्वपूर्ण परिवर्तनों के अलावा है, जिसका उद्देश्य प्रत्येक स्तर पर शैक्षिक प्रणाली में व्यावसायिक प्रशिक्षण को शामिल करना है। इन विधायी ढांचे के बावजूद, भारत कई महत्वपूर्ण कार्यान्वयन चुनौतियों का सामना कर रहा है, जिनमें निम्न शामिल हैं लेकिन इन्हीं तक सीमित नहीं हैं: खराब संस्थागत सुविधाएं, लैंगिक असमानताएं, अपर्याप्त औद्योगिक संबंध, अपर्याप्त बुनियादी ढांचा, पुराना और गलत तरीके से तैयार किया गया पाठ्यक्रम, अपर्याप्त संस्थागत सुविधाएं और कम छात्र नामांकन। हालाँकि, व्यावसायिक शिक्षा में बहुत सारे वादे हैं: यह युवाओं को रोजगार मिलने की संभावना को बढ़ाता है, यह उन्हें अपने स्वयं के उद्यम शुरू करने के लिए प्रेरित करता है, यह समुदायों के विकास में योगदान देता है, और यह स्वतंत्रता और आनंद की मात्रा को बढ़ाकर मानसिक स्वास्थ्य को बढ़ावा देता है जो व्यक्ति अनुभव करते हैं। इन मुद्दों को हल करने के लिए, अधिक संख्या में संसाधन, पाठ्यक्रम होना आवश्यक है जो कंपनी की आवश्यकताओं के अनुसार हो, प्रशिक्षकों को शिक्षित करने के बेहतर तरीके और कार्यान्वयन रणनीतियाँ जो समावेशी हों। मूल्यांकन भारत में व्यावसायिक शिक्षा को सामाजिक और आर्थिक परिवर्तन के लिए एक साधन बनाने के लिए जमीनी स्तर पर कार्यान्वयन के साथ नीतिगत उद्देश्यों को जोड़ने की आवश्यकता पर जोर देता है। व्यावसायिक शिक्षा को एक साधन के रूप में उपयोग करने के लिए यह आवश्यक है।

KEYWORDS:

व्यावसायिक शिक्षा, आर्थिक वृद्धि, पेशा, कार्यान्वयन और वैश्विक।

PAPER ACCEPTED DATE:	PAPER PUBLISHED DATE:
26th January 2025	30th January 2025
PAPER DOI NO:	**PAPER DOI LINK:**
10.5281/zenodo.18896794	https://zenodo.org/records/18896794

प्रस्तावना

भारतीय शिक्षा प्रणाली व्यावसायिक शिक्षा सहित शिक्षा के सभी स्तरों पर कार्य करती है। भारत में माध्यमिक शिक्षा के स्तर पर, पेशेवर कौशल को बढ़ाने के लिए व्यावसायिक शिक्षा की अत्यंत आवश्यकता है। व्यावसायिक शिक्षा व्यक्ति को किसी विशिष्ट कार्य के लिए सभी आवश्यक और अपेक्षित कौशलों से लैस करती है।व्यावसायिक शिक्षा और कौशल विकास की शिक्षा दोनों एक साथ चलते हैं और एक–दूसरे से गहराई से जुड़े हुए हैं। व्यावसायिक शिक्षा कुशल जनशक्ति तैयार करके, देश की औद्योगिक उत्पादकता बढ़ाकर और जीवन स्तर में सुधार करके देश के मानव संसाधन विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह छात्रों को कुशल बनने में मदद करती है और बदले में, रोजगार के बेहतर अवसर प्रदान करती है। ये दोनों ही उत्पादकता से जुड़े हुए हैं।व्यावसायिक शिक्षा देश के मानव संसाधन विकास में एक सर्वोपरि भूमिका निभाती है, जो न केवल कुशल मानव शक्ति तैयार करती है, बल्कि छात्रों के जीवन स्तर में भी सुधार करती है। भारत में कई आयोगों और समितियों ने व्यावसायिक शिक्षा पर विशेष जोर दिया है।नई नीति माध्यमिक कक्षाओं में एक अलग विषय के रूप में समाज उपयोगी उत्पादक कार्य और उच्च शिक्षा स्तर पर व्यावसायिक डिग्री पाठ्यक्रमों की सिफारिश की गई है। यह स्कूलों के भीतर कौशल प्रयोगशालाओं की स्थापना के साथ–साथ व्यावसायिक विषयों में विशेषज्ञता रखने वाले पर्याप्त शिक्षकों की भर्ती पर भी जोर देता है।व्यावसायिक शिक्षा शिक्षार्थियों को उन नौकरियों के लिए तैयार करती है जो शारीरिक या व्यावहारिक गतिविधियों पर आधारित होती हैं, जो पारंपरिक रूप से गैर–अकादमिक होती हैं और पूरी तरह से एक विशिष्ट व्यापार, व्यवसाय या आजीविका से संबंधित होती हैं, इसीलिए इसे यह नाम दिया गया है, जिसमें शिक्षार्थी स्वयं भाग लेता है (AICTE,2022)।कई व्यक्तियों के अनुसार, शिक्षा परिवर्तन और विकास के दौर से गुजर रही है। औपचारिक प्रशिक्षण के बारे में शिक्षाविदों द्वारा कई व्याख्याएँ और परिकल्पनाएँ प्रस्तावित की गई हैं।

शिक्षार्थी विकास जो बहु–आयामी, समग्र और सर्वव्यापी है, इस रणनीति या लक्ष्य को दिया गया नाम है। शिक्षा की प्रक्रिया के माध्यम से, व्यक्ति अधिक योग्य व्यक्ति बन सकता है। शिक्षा की अवधारणा उन अद्वितीय मस्तिष्कों से गहराई से प्रभावित हुई है जो इतिहास के दौरान विकसित हुए हैं। उनमें से प्रत्येक की अनूठी सामाजिक प्रणालियों के आधार पर। व्यावसायिक शिक्षा उस औपचारिक प्रशिक्षण को संदर्भित करती है जो एक छात्र को एक विशेष कैरियर की तैयारी में प्राप्त होता है। उन्हें अपने व्यावहारिक कौशल को निखारने, ज्ञान प्राप्त करने और कैरियर की तैयारी में अपनी प्रतिभा को निखारने में सहायता करने के लिए एक विशिष्ट व्यावसायिक उद्देश्य प्रदान करने का अवसर। व्यावसायिक शिक्षा का आर्थिक प्रभाव महत्वपूर्ण है और इसे कम करके नहीं आंका जाना चाहिए।आर्थिक रूप से वंचित देशों में उन्नति, रोजगार

और कौशल का विकास (सिंह और कौर, 2024) के निष्कर्षों के अनुसार। अपने मानव संसाधनों की गणवत्ता में सुधार के लिए सरकार द्वारा किए गए कई प्रयास प्रभावी रहे हैं। यह व्यावसायिक शिक्षा के क्षेत्र में विशेष रूप से सच है, जहां उद्देश्य सक्षम श्रमिकों को उत्पन्न करना है। अरियानी एट अल के 2021 के शोध के अनुसार, आधिकारिक अध्ययनव्यावसायिक शिक्षा रोजगार और उद्योग के बारे में ज्ञान प्राप्त करने की एक विधि है, और यह अक्सर मौलिक कौशल के एक चुनिंदा समूह पर जोर देती है। ऐसे व्यवसाय जिन्हें मध्यम वर्ग माना जाता है।"व्यावसायिक शिक्षा" और "तकनीकी शिक्षा" शब्दों का उपयोग अक्सर बड़ी संख्या में व्यक्तियों द्वारा एक दूसरे के स्थान पर किया जाता है। इस तरह की शिक्षा का उद्देश्य छात्रों को अकादमिक नींव और व्यावहारिक अनुभव प्रदान करना है जो काम या पेशे की एक निश्चित पंक्ति में सफलता प्राप्त करने के लिए आवश्यक हैं। यह शिक्षा के पारंपरिक दृष्टिकोण के विपरीत है, जिसमें शामिल हैं –अकादमिक शिक्षा के विपरीत, जो छात्रों को वास्तविक दुनिया के लिए प्रासंगिक व्यावहारिक कौशल और अनुप्रयोगों पर ध्यान केंद्रित करके तत्काल काम के लिए तैयार करती है, व्यावसायिक शिक्षा अलग है।हालाँकि, भौतिक दृष्टि से बहुत कुछ हासिल किया गया है, लेकिन जमीनी स्तर पर कई समस्याओं का अनुभव किया गया है। भारत में प्रचलित व्यावसायिक शिक्षा प्रणाली के अध्ययन के माध्यम से निम्नलिखित समस्या क्षेत्रों की पहचान की गई है:

भारत में व्यावसायिक शिक्षा का वर्तमान परिदृश्य

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP 2020) के लागू होने के बाद, भारत में व्यावसायिक शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण में व्यापक बदलाव आया है। वर्तमान में, इसे केवल एक शविकल्पश के रूप में नहीं, बल्कि मुख्यधारा की शिक्षा के एक अभिन्न अंग के रूप में देखा जा रहा है।सरकार ने 2025–26 तक कम से कम 50% शिक्षार्थियों को व्यावसायिक शिक्षा का अनुभव प्रदान करने का लक्ष्य रखा है। इसमें स्कूल स्तर (कक्षा 6) से ही व्यावसायिक कौशल की शुरुआत शामिल है।यह एक गुणवत्ता आश्वासन ढांचा है जो कौशल को विभिन्न स्तरों में व्यवस्थित करता है। यह छात्रों को अकादमिक शिक्षा और व्यावसायिक प्रशिक्षण के बीच आवाजाही की सुविधा देता है।अब पारंपरिक ट्रेडों के साथ–साथ आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, रोबोटिक्स, क्लाउड कंप्यूटिंग और ग्रीन एनर्जी जैसे आधुनिक क्षेत्रों पर जोर दिया जा रहा है।

अब पारंपरिक ट्रेडों के साथ–साथ भारत भी अपने ह्यूमन रिसोर्स को स्किल्ड और जानकार बनाना चाहता है। यह साफ है कि हर किसी को सरकारी सेक्टर में जगह नहीं मिल सकती और इतनी बड़ी अनस्किल्ड आबादी अपनी रोजी–रोटी कमाने में असमर्थ है। वोकेशनल एजुकेशन का विजन आने वाली पीढ़ी को कल का स्किल्ड नागरिक बनाना है। अलग–अलग सीनियर सेकेंडरी स्कूलों में वोकेशनल सब्जेक्ट्स शुरू करना, भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय द्वारा देश भर में की गई एक बड़ी पहल है। यह देखा गया है कि हमारे युवा छात्र काम की गरिमा के लिए मोटिवेटेड नहीं हैं, जिससे अच्छे नतीजे नहीं मिल रहे हैं। नॉर्मल करिकुलम के साथ वोकेशनल ट्रेड्स शुरू करने से युवा मन में नैतिक मूल्य पैदा करने में मदद मिलेगी ताकि हर काम का सम्मान किया जा सके। वोकेशनल एजुकेशन की वजह से हमारे छात्र 21वीं सदी के स्किल्स के साथ समझदारी से सोच सकते हैं।आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, रोबोटिक्स, क्लाउड कंप्यूटिंग और ग्रीन एनर्जी जैसे आधुनिक क्षेत्रों पर जोर दिया जा रहा है।सरकार अब उद्योगों के साथ साझेदारी कर रही है ताकि ऑन–द–जॉब ट्रेनिंग और शिक्षुता को पाठ्यक्रम का अनिवार्य हिस्सा बनाया जा सके।

व्यावसायिक पाठ्यक्रम रोजगार क्षमता

ये पाठ्यक्रम कौशल की कमी को दूर करते हैं। भारत में विनिर्माण निर्माण खुदरा स्वास्थ्य सेवा और आईटी जैसे कई उद्योगों को कुशल श्रमिकों की आवश्यकता है। व्यावसायिक प्रशिक्षण लोगों को इन क्षेत्रों में आवश्यक विशिष्ट तकनीकी कौशल से लैस करता है। उच्च शिक्षा अक्सर काफी हद तक सैद्धांतिक ज्ञान पर केंद्रित होती है, जिससे व्यावहारिक और नौकरी के लिए तैयार कौशल के बीच एक बड़ा अंतर रह जाता है।व्यावसायिक पाठ्यक्रम व्यावहारिक प्रशिक्षण प्रदान करते हैं जो सीधे कार्यस्थल पर लागू होता है, जिससे यह सुनिश्चित होता है कि श्रमिक अपनी भूमिकाओं की मांगों के लिए बेहतर रूप से तैयार हैं। व्यावसायिक पाठ्यक्रमों की पेशकश करके, भारत कुशल श्रमिकों की मांग और प्रशिक्षित पेशेवरों की सीमित आपूर्ति के बीच की खाई को पाट सकता है।यह अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि वर्तमान परिदृश्य काफी चिंताजनक है। इंडिया स्किल्स रिपोर्ट 2020 के अनुसार, पिछले तीन वर्षों से युवा रोजगार दर स्थिर बनी हुई है। यूनिसेफ और शिक्षा आयोग के अनुसार, 2030 तक 50% से अधिक भारतीय युवाओं के पास रोजगार के लिए आवश्यक शिक्षा और कौशल का अभाव होगा।

ईस्ट वेस्ट सेंटर फॉर काउंसलिंग की संस्थापक–निदेशक मैग्डलीन जेयरत्नम कहती हैं कि शैक्षिक पाठ्यक्रम पिछले कुछ वर्षों में अप्रासंगिक हो गया है क्योंकि यह छात्रों को जॉब मार्केट में प्रवेश करने में मदद करने के लिए तैयार नहीं है। मैग्डलीन, जो कॉलेजों मेंएक्सप्रेसिव आर्ट्स थेरेपी और 'साइकोड्रामा' के पाठ्यक्रम संचालित करती हैं, कहती हैं: पाठ्यक्रम इस आधार पर तैयार किया जाता है कि अतीत में क्या पढ़ाया गया था, और बदलाव अगले एक–दो वर्षों को ध्यान में रखकर किए जाते हैं, न कि इस आधार पर कि आज से पांच या उससे अधिक वर्षों के बाद क्या आवश्यकता होगी। चूँकि यूजीसी के दिशा–निर्देश अब स्नातक और स्नातकोत्तर छात्रों के लिए कौशल प्रमाणन अनिवार्य करते हैं, वह आगे कहती हैं, जब छात्र कौशल–आधारित प्रमाणपत्र प्राप्त करते हैं, तो यह उनकी डिग्री के मूल्य को और बढ़ा देता है।

मान्यता की कमी और ड्रॉपआउट दरें

कई मामलों में, व्यावसायिक पाठ्यक्रमों के पास उद्योग निकायों या पेशेवर संघों से औपचारिक मान्यता या प्रत्यायन का अभाव होता है। इससे पाठ्यक्रमों की विश्वसनीयता और प्रदान की गई योग्यता का मूल्य कम हो जाता है, जिससे छात्रों के लिए ऐसे नियोक्ताओं को खोजना मुश्किल हो जाता है जो उनके प्रशिक्षण को मान्यता दें।कई छात्र जो व्यावसायिक पाठ्यक्रम शुरू करते हैं, वे अक्सर विभिन्न कारणों से बीच में ही पढ़ाई छोड़ देते हैं । इसके पीछे रुचि की कमी, शैक्षणिक शिक्षा प्राप्त करने का सामाजिक दबाव, या पाठ्यक्रम पूरा करने से तत्काल लाभ न दिखाई देना जैसे कारक जिम्मेदार होते हैं।

व्यावसायिक शिक्षा का महत्व

21वीं सदी के तेजी से बदलते वैश्विक परिदृश्य में, व्यावसायिक शिक्षा केवल एक विकल्प नहीं, बल्कि आर्थिक स्थिरता और व्यक्तिगत विकास के लिए एक आवश्यकता बन गई है।आज की अर्थव्यवस्था में ऑटोमेशन, एआई और डेटा एनालिटिक्स का बोलबाला है। व्यावसायिक शिक्षा छात्रों को इन आधुनिक तकनीकों के साथ काम करने के लिए व्यावहारिक कौशल प्रदान करती है।आज की अर्थव्यवस्था में ऑटोमेशन, एआई और डेटा एनालिटिक्स का बोलबाला है। व्यावसायिक शिक्षा छात्रों को इन आधुनिक तकनीकों के साथ काम करने के लिए व्यावहारिक कौशल प्रदान करती है।कंपनियों को अक्सर ऐसे डिग्री धारक मिलते हैं जिनके पास किताबी ज्ञान तो है, लेकिन व्यावहारिक अनुभव नहीं। व्यावसायिक शिक्षा इस अंतर को प्रभावी ढंग से खत्म करती है।एक कुशल कार्यबल देश की उत्पादकता और जीडीपी को बढ़ाने में सीधे योगदान देता है।एक कुशल कार्यबल देश की उत्पादकता और जीडीपी को बढ़ाने में सीधे योगदान देता है।व्यवसायिक शिक्षा का एक मुख्य लाभ अपनी पसंद का करियर चुनने की क्षमता है। जहाँ व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाला व्यक्ति पहले से ही अपने सपनों की नौकरी की राह पर होता है, वहीं अधिकांश लोग गलत नौकरियों में फंसे हुए हैं क्योंकि वे केवल पैसे, विवशता, विकल्पों की कमी और पेशेवर समझौतों के कारण वहां काम कर रहे हैं।यदि हमारे तकनीशियन आवश्यक कार्य करने में सक्षम हों और व्यावसायिक शिक्षा में प्रशिक्षित हों, तो सरकार को अधिक वेतन पर विदेशी तकनीशियनों को नियुक्त करने की आवश्यकता नहीं होगी, और यह देश की अर्थव्यवस्था के लिए बहुत फायदेमंद होगा।व्यवसायिक शिक्षा अत्यधिक कुशल श्रमिक प्रदान करती है जो मांग और आपूर्ति के बीच के अंतर को कम करते हैं। इसके अतिरिक्त, यह छात्रों को कक्षा में सीखे गए विपणन योग्य कौशल को सीधे कार्यस्थल पर उपयोग करने के लिए अधिकृत करती है।

निष्कर्ष

नेशनल एजुकेशन पॉलिसी 2020 के प्रस्ताव के अनुसार वोकेशनल एजुकेशन की शुरुआत देश की युवा आबादी के लिए उम्मीद की किरण दिख रही है। व्यावसायिक शिक्षा केवल एक वैकल्पिक शैक्षिक मार्ग नहीं है, बल्कि यह आर्थिक विकास और व्यक्तिगत सशक्तिकरण का एक अनिवार्य स्तंभ है। यह किताबी ज्ञान और व्यावहारिक कौशल के बीच की दूरी को पाटकर युवाओं को आत्मनिर्भर बनाती है। जैसे–जैसे वैश्विक अर्थव्यवस्था बदल रही है, कुशल कार्यबल की आवश्यकता बढ़ती जा रही हैय ऐसे में व्यावसायिक शिक्षा को बढ़ावा देना न

केवल बेरोजगारी को कम करने के लिए महत्वपूर्ण है, बल्कि एक राष्ट्र के रूप में भारत को वैश्विक मानचित्र पर तकनीकी रूप से सक्षम और आर्थिक रूप से सुदृढ़ बनाने के लिए भी अनिवार्य है।उच्च माध्यमिक शिक्षा में व्यावसायिक शिक्षाएक विशिष्ट धारा है। भारत में अभी एजुकेशन का माहौल बदल रहा है और स्किल एजुकेशन पर ज़्यादा ध्यान दिया जा रहा है।

हालांकि काफी तरक्की हुई है, लेकिन इंफ्रास्ट्रक्चर की क्वालिटी, ट्रेनिंग और इंडस्ट्री की जरूरतों के साथ एजुकेशनल नतीजों का तालमेल जैसी मुश्किलों से निपटने के लिए लगातार कोशिशों की जरूरत है। इसका मकसद एक ऐसी वर्कफोर्स बनाना है जो पढ़ाई में माहिर होने के साथ–साथ एक कॉम्पिटिटिव और डायनामिक ग्लोबल इकॉनमी में आगे बढ़ने के लिए जरूरी प्रैक्टिकल स्किल्स से भी लैस हो।1970 से 90 के दशक के दौरान ही शैक्षिक अवसरों में विविधता लाने, व्यक्तिगत रोजगार क्षमता बढ़ाने और कुशल श्रम शक्ति की मांग और आपूर्ति के बीच के अंतर को कम करने के लिए व्यावसायिक शिक्षा की अवधारणा पर गंभीरता से विचार किया गया था। व्यावसायिक कार्यक्रम आवश्यक ज्ञान प्रदान करते हैं और छात्रों को विभिन्न व्यवसायों में काम करने के लिए तैयार करते हैं, जिससे उन्हें समस्या समाधानकर्ता बनने और जीवन भर सीखने के लिए प्रेरित किया जाता है। किसी भी राष्ट्र की प्रगति संसाधनों और जनशक्ति के इष्टतम उपयोग पर पूरी तरह निर्भर करती है। हमारी शिक्षा प्रणाली का पुनर्गठन छात्रों को करियर के मोर्चे पर नई दिशा देने और एक आत्मनिर्भर पीढ़ी को बढ़ावा देने का अवसर प्रदान कर रहा है।व्यवसायिक शिक्षा किसी भी देश के रोजगार और उसी तरह उसकी अर्थव्यवस्था को मजबूती प्रदान करती है। एक विकासशील दुनिया होने के नाते, भारत ने व्यवसायिक शिक्षा को बढ़ाने और उसे लागू करने की दिशा में एक लंबा सफर तय किया है।तकनीकी कौशल हमेशा अकादमिक ज्ञान से अधिक प्रभावी और महत्वपूर्ण होते हैं, और इसे किसी भी जीवन अनुभव के माध्यम से आसानी से समझा जा सकता है। यदि घर की पाइपलाइन, बिजली के सर्किट, टेलीविजन सेट या कार के इंजन में अचानक कोई खराबी आ जाए, तो हमें तत्काल मरम्मत के लिए संबंधित क्षेत्र के मैकेनिक या कुशल व्यक्ति को ही बुलाना पड़ता है।

ऐसी स्थिति में, संबंधित क्षेत्रों में ही किताबी ज्ञान और कई अकादमिक डिग्री रखने वाले व्यक्ति की कोई भूमिका नहीं होती। व्यावहारिक ज्ञान पर आधारित कार्यक्रम व्यावसायिक शिक्षा के माध्यम से प्रदान किए जाते हैं।इसकी मदद से सीखने वाले अपने प्रोफेशनल और पर्सनल डेवलपमेंट के लिए जरूरी काबिलियत हासिल कर सकते हैं। इससे एक ज़्यादा जानकार, क्रिएटिव और सबको साथ लेकर चलने वाला समाज भी बन सकता है। इसलिए, स्कूल सिस्टम में शामिल हर किसी की यह जिम्मेदारी है कि वे स्किल–बेस्ड लर्निंग को सपोर्ट और बढ़ावा दें।सभी स्तरों के हितधारकों को आगे आना चाहिए ताकि आधुनिक विधाओं में प्रचुर कौशल और निपुणता के साथ भारतीययुवाओं को ढाला जा सके, जिससे रोजगार के अवसरों को समृद्ध किया जा सके और मानव संसाधनों का अधिक सार्थक उपयोग सुनिश्चित हो सके।

सिफारिशें

- ❖ तकनीकी और व्यावसायिक शिक्षा के महत्व के बारे मे समाज को शिक्षित करने के लिए पर्याप्त जागरूकता अभियान चलाए जाने चाहिए।
- ❖ व्यावसायिक स्कूलों में औद्योगिक भागीदारी होनी चाहिए और साथ ही छात्रों के लिए औद्योगिक क्षेत्रों का भ्रमण करने की व्यवस्था भी की जानी चाहिए।
- ❖ व्यावसायिक और तकनीकी विषयों को पढ़ाने के लिए पेशेवर और अनुभवी शिक्षकों को नियुक्त किया जाना चाहिए।
- ❖ स्वदेशी प्रथाओं पर छात्रों के लिए इंटर्नशिप आयोजित करने हेतु स्थानीय व्यावसायिक शिल्पों की पहचान करना।
- ❖ स्थानीय विशेषज्ञों की पहचान करना और छात्रों के लिए इंटर्नशिप प्रशिक्षण आयोजित करना।
- ❖ अनौपचारिक इंटर्नशिप कार्यक्रमों के माध्यम से व्यावसायिक अनुभव प्राप्त करने के लिए समुदाय और उद्योग की भागीदारी सुनिश्चित करना।

REFERENCES

1. कैबार्ता, एम. (2018). भारत में प्राचीन व्यावसायिक शिक्षा. रिसर्च रिव्यू इंटरनेशनल जर्नल ऑफ मल्टीडिसिप्लिनरी, 3(8), 659-662.

2. रानी, पी. (2015). भारत में वोकेशनल एजुकेशन- एक मूल्यांकन. अपस्ट्रीम रिसर्च इंटरनेशनल जर्नल (URIJ), III (III).

3. कौशिक, के (2014) इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशन एंड इन्फॉर्मेशन स्टडीज. ISSN 2277-3169 वॉल्यूम 4, नंबर 1, पेज 55-58.

4. AICTE- (2022). वोकेशनल एजुकेशन. 16 फरवरी, 2025 को यहाँ से लिया गया

5. अरियानी, ई., सूर्यानी, एस. एन. और प्रबावानी, डी. (2021). स्टूडेंट्स की एम्प्लॉयबिलिटी पर वोकेशनल एजुकेशन का असर। जर्नल ऑफ फिजिक्सरू कॉन्फ्रेंस सीरीज, 01(18).

6. सिंह, एस., और कौर, एस. (2024). वोकेशनल एजुकेशन और एंटरप्रेन्योरशिपरू भारतीय युवाओं पर एक स्टडी। जर्नल ऑफ स्मॉल बिजनेस मैनेजमेंट, 50, 885-902.

7. अग्रवाल, टी. (2012). भारत में वोकेशनल एजुकेशन और ट्रेनिंगरू चुनौतियाँ, स्थिति और लेबर मार्केट के नतीजे. जर्नल ऑफ वोकेशनल एजुकेशन एंड ट्रेनिंग, 64(4), 453-474.

8. https://www.aicteindia.org/education/vocational-education

9. www.researchgate.net/publication/299886927- भारतीय वोकेशनल एजुकेशन सिस्टम।